अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : पाँचवीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) अन्तर्द्वीपज मनुष्य की उत्कृष्ट अवगाहना है-
(क) 800 धनुष (ख) 1 गाउ
(ग) 2 गाउ (घ) 3 गाउ (क)

(ii) 10वें देवलोक की उत्कृष्ट स्थिति कितने सागरोपम की है-
(क) 18 (ख) 19
(ग) 20 (घ) 21 (ग)

(iii) पाचवीं नारकी में लेश्याएँ हैं-
(क) नील (ख) नील, कृष्ण
(ग) कृष्ण (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(iv) वैक्रिय लब्धि के प्रयोग से किसकी उत्कृष्ट अवगाहना पृथक्त्व सौ योजन होती है-
(क) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय (ख) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय
(ग) नारकी (घ) देवता (ख)

(v) किस गुणस्थान की उत्कृष्ट स्थिति 33 सागर है-
(क) चौथा (ख) पाँचवाँ
(ग) छठा-सातवाँ मिलाकर (घ) उपर्युक्त सभी की (क)

(vi) मोहनीय कर्म के उदय से परीषह है-
(क) अज्ञान (ख) शय्या
(ग) निषद्या (घ) रोग (ग)

(vii) अनाहारक में अधिकतम कितने गुणस्थान हैं-
(क) 3 (ख) 5
(ग) 6 (घ) 9 (ख)

(viii) तीसरे गुणस्थान में अधिकतम योग हो सकते हैं-
(क) 13 (ख) 12
(ग) 11 (घ) 10 (घ)

(ix) चार अनुत्तर विमान का देव भविष्य में अधिकतम कितनी द्रव्येन्द्रियाँ करेगा-
(क) अनन्त (ख) असंख्यात
(ग) संख्यात (घ) आठ (ग)

(x) सर्वार्थसिद्ध के बहुत देव संज्ञी मनुष्यपणे भविष्य में अधिकतम द्रव्येन्द्रियाँ करेंगे-
(क) आठ (ख) संख्यात
(ग) सौलह (घ) नहीं करेंगे (ख)

(xi) वायुकाय का जीव भविष्य में कम से कम कितनी द्रव्येन्द्रियाँ करेगा-
(क) 8 (ख) 9
(ग) 16 (घ) अनन्त (ख)

(xii) वीर्य आत्मा के साथ कितनी आत्मा की नियमा है-
(क) 4 (ख) 3
(ग) 5 (घ) 2 (ख)

(xiii) सिद्धों में कुल कितनी आत्माएँ मिलती हैं-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 5 (घ) 2 (ख)

(xiv) परिव्राजक की उत्कृष्ट गति है-
(क) पाँचवाँ देवलोक (ख) आठवाँ देवलोक
(ग) बारहवाँ देवलोक (घ) ज्योतिषी (क)

(xv) हँसी-मजाक करने वाले साधु कहलाते हैं-
(क) आभियोगिक (ख) परिव्राजक
(ग) आजीविक (घ) कान्दर्पिक (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) देवों में अधिकतम पाँच समुद्घात मिलते हैं। (हाँ)

(ii) निर्व्याघात की अपेक्षा एकेन्द्रिय छहों दिशाओं का आहार करते हैं। (हाँ)

(iii) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय का च्यवन उत्कृष्ट असंख्यात है। (हाँ)

(iv) युगलिक की जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति बराबर होती है। (नहीं)

(v) सन्नी, असन्नी जलचर की उत्कृष्ट अवगाहना समान होती है। (हाँ)

(vi) प्रथमोपशम में जीव श्रेणि प्राप्त नहीं कर सकता है। (हाँ)

(vii) प्रथम तीन गुणस्थानों में ईरियावहिया क्रिया ही मिलती है। (नहीं)

(viii) प्रज्ञा भी मुनि के लिए एक परीषह है। (हाँ)

(ix) 13वें गुणस्थान में कार्मण काय योग नहीं मिलता है। (नहीं)

(x) सभी दण्डकों के एक-एक जीव ने अतीत में अनन्त इन्द्रियाँ की हैं। (हाँ)

(xi) संज्ञी मनुष्य सर्वार्थसिद्ध पने द्रव्येन्द्रियाँ कोई करेंगे, कोई नहीं करेंगे। (हाँ)

(xii) ज्ञान आत्मा में दर्शन आत्मा की नियमा है। (हाँ)

(xiii) सबसे अधिक वीर्य आत्मा वाले जीव हैं। (नहीं)

(xiv) जो चारित्र परिणाम से अशून्य है, वह असंयत है। (नहीं)

(xv) आराधक साधु ज्योतिषी देव भी बन सकता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिएः- 15x1=(15)

(i)	समुद्घात	(क) सादि	वैक्रिय
(ii)	सातवीं नारकी की अवगाहना	(ख) 26 लाख जीवयोनि	500 धनुष
(iii)	सातवाँ गुणस्थान	(ग) पुरेक्खड़ा इन्द्रियाँ उत्कृष्ट संख्यात	योग 9
(iv)	संस्थान	(घ) वैक्रिय	सादि
(v)	संहनन	(च) 7 हाथ	सेवार्त्तक
(vi)	13वाँ गुणस्थान	(छ) 6 द्रव्येन्द्रियाँ	पृथक्त्व करोड
(vii)	त्रीन्द्रिय	(ज) सेवार्त्तक	4 द्रव्येन्द्रियाँ
(viii)	असन्नी मनुष्य	(झ) पुरेक्खड़ा इन्द्रियाँ जघन्य 8	पुरेक्खड़ा इन्द्रियाँ जघन्य 9
(ix)	चौथा गुणस्थान	(य) 500 धनुष	26 लाख जीवयोनि
(x)	पहले देवलोक का देव	(र) 2,4,6.....सं., असं.,अनंत	पुरेक्खड़ा इन्द्रियाँ जघन्य 8
(xi)	पंचेन्द्रिय	(ल) पृथक्त्व करोड़	8,16,24.....सं. असं. अनंत
(xii)	द्वीन्द्रिय	(व) 8,16,24.....सं. असं. अनंत	2,4,6.....सं., असं.,अनंत
(xiii)	चतुरिन्द्रिय	(क्ष) योग 9	6 द्रव्येन्द्रियाँ
(xiv)	चार अनुत्तर विमान का देव	(त्र) 4 द्रव्येन्द्रियाँ	पुरेक्खड़ा इन्द्रियाँ उत्कृष्ट संख्यात
(xv)	गर्भज मनुष्य की अवगाहना	(ज्ञ) पुरेक्खड़ा इन्द्रियाँ जघन्य 9	7 हाथ

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i) मैं हड्डियों की रचना विशेष हूँ। संहनन

(ii) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 3 अहोरात्रि की है। तेऊकाय

(iii) मुझमें चार भाव प्राण होते हैं। सिद्ध

(iv) मैं एक लाख योजन झाझेरी अवगाहना कर सकता हूँ। गर्भज मनुष्य

(v) देवों में सर्वाधिक स्थिति मेरी है। सर्वार्थ सिद्ध विमान के देव

(vi) मैं मिश्रमोहनीय के उदय से मिलने वाला गुणस्थान हूँ।
सम्यग्मिथ्या दृष्टि गुणस्थान/मिश्र गुणस्थान/तीसरा गुणस्थान

(vii) मैं 11 से 14 गुणस्थानों में होने वाला चारित्र हूँ। यथाख्यात चारित्र

(viii) मैं ऐसी समकित हूँ, जो 4 से 7 गुणस्थानों में ही मिलती हूँ। क्षायोपशमिक/वेदक समकित

(ix) मेरे उदय से साधु को सिर्फ एक परीषह संभव है। अन्तराय कर्म

(x) मेरा नाम अस्थायी क्षय भी है। विसंयोजना

(xi) एकेन्द्रिय होते हुए भी मैं वैक्रिय समुद्घात कर सकता हूँ। वायुकाय

(xii) मैं ऐसा भाव हूँ, जो केवलियों में तो होता है, सिद्धों में नहीं। औदयिक भाव

(xiii) मेरे कारण से 11 से 13 गुणस्थानों में बंध है। योग

(xiv) मैं मन्त्र-जन्त्रादि करने वाला साधु हूँ। आभियोगिक

(xv) पाँच पदवियों में से 'अ' से प्रारंभ होने वाली एक पदवी हूँ। अहमिन्द्र

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2=(16)

(i) चार दर्शनों के नाम लिखिए।

उ. 1. चक्षु 2. अचक्षु 3. अवधि 4. केवलदर्शन

(ii) छठे गुणस्थान में कितने कर्मों की उदीरणा होती है ?

उ. छठे गुणस्थान में सात, आठ अथवा छह कर्मों की उदीरणा होती है।

(iii) संज्ञी मनुष्यों में पाँच अनुत्तर विमान के देव रूप में अतीत में कितनी द्रव्येन्द्रियाँ की और भविष्य में कितनी करेंगे ?

उ. संज्ञी मनुष्य के जीवों ने अनुत्तर विमान के देव रूप में द्रव्येन्द्रियाँ अतीत में संख्यात की, वर्तमान में नहीं हैं और भविष्य में संख्यात करेंगे।

(iv) चारित्र और कषाय आत्मा का अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. 1. सबसे थोड़े चारित्र आत्मा, 2. उससे ज्ञान आत्मा वाले अनन्त गुणा, 3. उससे कषाय आत्मा वाले अनन्त गुणा।

(v) ज्ञान आत्मा के साथ किन आत्माओं की नियमा है ?

उ. 3 (द्रव्य, दर्शन,उपयोग) आत्मा की।

(vi) वीर्य आत्मा किसे कहते हैं ?

उ. करण वीर्य युक्त आत्मा को वीर्य आत्मा कहते हैं। यह आत्मा सब संसारी जीवों के होती है।

(vii) विराधक साधु की जघन्य-उत्कृष्ट गति क्या है ?

उ. जघन्य भवनपति में, उत्कृष्ट पहले देवलोक में उत्पन्न होते हैं।

(viii) स्वलिंगी दर्शन भ्रष्ट साधु की जघन्य-उत्कृष्ट गति क्या है ?

उ. जघन्य भवनपति में, उत्कृष्ट ऊपर के (नववें) ग्रैवेयक में उत्पन्न होते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) पहले देवलोक की परिगृहीता देवियों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

उ. परिगृहिता देवियों की स्थिति जघन्य 1 पल्योपम , उत्कृष्ट 7 पल्योपम।

(ii) सास्वादन गुणस्थान को परिभाषित कीजिए।

उ. उपशम सम्यक्त्वी के अनन्तानुबन्धी कषाय का उदय होने से व दर्शन त्रिक का उपशम कायम रहने से सम्यक्त्व की आस्वाद मात्र जो अवस्था बनती है, उसे सास्वादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थान कहते है।

(iii) द्वितीयोपशम के दोनों भंग लिखिए।

उ. सातों प्रकृतियों का उपशम (4 से 11 गुणस्थान तक, स्थिति-जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त)
चार की विसंयोजना, तीन का उपशम (4 से 11 गुणस्थान तक, स्थिति-जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त)

(iv) पाँच भावों के नाम लिखिए।

उ. 1. औदयिक भाव, 2. औपशमिक भाव, 3. क्षायिक भाव, 4. क्षायोपशमिक भाव,
5. पारिणामिक भाव

(v) दूसरे तथा तीसरे गुणस्थान की आगति-गति मार्गणा लिखिए।

उ. दूसरे गुणस्थान की आगति मार्गणा तीन (4,5,6), गति मार्गणा एक (1)।
तीसरे गुणस्थान की आगति मार्गणा चार (1,4,5,6) गति मार्गणा दो (1,4)।

(vi) दूसरे गुणस्थान का एक तथा अनेक भवों की अपेक्षा से आकर्ष लिखिए।

उ. दूसरा गुणस्थान एक भव की अपेक्षा जघन्य एक बार, उत्कृष्ट दो बार और अनेक भवों की अपेक्षा जघन्य दो बार, उत्कृष्ट पाँच बार प्राप्त हो सकता है।

(vii) नवग्रैवेयक के देवों की संज्ञी मनुष्यपणे तीनों काल की द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।

उ. अतीत काल में अनन्त की, वर्तमान में स्व स्थान की अपेक्षा असंख्यात है, पर स्थान की अपेक्षा नहीं है और भविष्य में अनन्त करेंगे।

(viii) एक-एक नारकी के नैरयिक की संज्ञी मनुष्यपणे तीनों काल की द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।

उ. एक-एक नारकी के नैरयिक ने संज्ञी मनुष्य रूप में द्रव्येन्द्रियाँ अतीत काल में अनन्त कीं, वर्तमान काल में नहीं है और भविष्य काल में नियमपूर्वक 8 या 16 या 24 यावत् संख्यात, असंख्यात, अनन्त करेंगे।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : पाँचवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 11 जनवरी, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) ज्योतिषी देवों की जघन्य- स्थिति है-
(क) पाव पल्योपम (ख) पाव पल्योपम झाझेरी
(ग) पल का आठवाँ भाग (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(b) वायुकाय में समुद्घात मिलती है-
(क) तीन (ख) चार
(ग) पाँच (घ) सात (ख)

(c) उत्तरकुरु में युगलिक की अधिकतम स्थिति है-
(क) 1 पल (ख) 2 पल
(ग) 3 पल (घ) पल का असंख्यातवाँ भाग (ग)

(d) असन्नी मनुष्य प्रतिसमय अधिकतम कितने उपज सकते हैं
(क) संख्यात (ख) असंख्यात
(ग) अनन्त (घ) 10 (ख)

(e) दर्शन मोहनीय के उपशम की नियमा किस समकित में है-
(क) उपशम (ख) क्षयोपशम
(ग) क्षायिक (घ) वेदक (क)

(f) किस गुणस्थान में सम-समयवर्ती त्रैकालिक जीवों के परिणाम समान होते हैं-
(क) सातवाँ (ख) आठवाँ
(ग) नवमाँ (घ) दसवाँ (ग)

(g) 12वें गुणस्थान में कितने कर्मों की सत्ता है-
(क) 8 (ख) 7
(ग) 6 (घ) 4 (ख)

(h) अप्रतिपाती गुणस्थान कितने हैं-
(क) 1 (ख) 2
(ग) 3 (घ) 4 (ग)

(i) पन्नवणा सूत्र के कौनसे पद में 8 द्रव्येन्द्रियों का थोकड़ा चलता है-
(क) 5वाँ (ख) 15वाँ
(ग) 12वाँ (घ) 10वाँ (ख)

(j) त्रीन्द्रिय जीव भविष्य में कम से कम कितनी द्रव्येन्द्रियाँ करेंगे-
(क) 4 (ख) 8
(ग) 9 (घ) 16 (ग)

(k) अनेक जीव आश्री वनस्पति में वर्तमान में कितनी द्रव्येन्द्रियाँ होती हैं-
(क) अनन्त (ख) असंख्यात
(ग) संख्यात (घ) एक (ख)

(l) ज्ञान आत्मा में कुल कितने गुणस्थान हैं-
(क) 11 (ख)12
(ग) 14 (घ) 9 (ख)

(m) द्रव्य आत्मा के साथ कितनी आत्मा की भजना है-
(क) 2 (ख) 5
(ग) 4 (घ) 3 (ख)

(n) विराधक श्रावक मरकर उत्कृष्ट कहाँ उत्पन्न होते हैं-
(क) भवनपति (ख)ज्योतिषी
(ग) वाणव्यन्तर (घ) वैमानिक (ख)

(o) आजीविक मत के साधु मरकर अधिकतम कहाँ उत्पन्न होते हैं-
(क) पाँचवाँ देवलोक (ख)आठवाँ देवलोक
(ग) छठा देवलोक (घ) बारहवाँ देवलोक (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(a) दूसरे देवलोक में उत्कृष्ट अवगाहना सात हाथ की है। (हाँ)
(b) त्रीन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति तीन अहोरात्रि की है। (नहीं)
(c) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में चार गति से आ सकते हैं। (नहीं)
(d) छठा आरा उतरते गर्भज मनुष्य की उत्कृष्ट अवगाहना 2 हाथ की होती है। (नहीं)
(e) युगलिक में औदारिक मिश्रकाय योग नहीं मिलता है। (नहीं)
(f) आठवें गुणस्थान का नाम 'अपूर्वकरण' भी है। (हाँ)
(g) सयोगी केवली गुणस्थान के अंत में शेष चार अघाती कर्मों का अंत होता है। (नहीं)
(h) 14वें गुणस्थान में 'ईरियावहिया' क्रिया ही पाई जाती है। (नहीं)
(i) 'निषद्या परीषह' वेदनीय कर्म के उदय से होता है। (नहीं)
(j) चार अनुत्तर विमान के बहुत देव सर्वार्थसिद्ध पणे भविष्य में असंख्यात द्रव्येन्द्रियाँ केरेंगे (नहीं)
(k) पहले देवलोक के देव अनुत्तर विमान पणे अवश्य द्रव्येन्द्रियाँ करेंगे। (नहीं)
(l) सबसे कम ज्ञान आत्मा वाले हैं। (नहीं)
(m) योग आत्मा में उपयोग आत्मा की नियमा है। (हाँ)
(n) असंयत भव्य-द्रव्य देव का थोकड़ा भगवती सूत्रानुसार है। (हाँ)
(o) आजिविक मत गोशालक द्वारा प्ररूपित है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(a)	असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय	(क) हेतु 22	योग 4
(b)	सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय	(ख) क्रियाएँ 21	योग 13
(c)	देवकुरु के मनुष्य	(ग) 54 जीव	दृष्टि दो
(d)	गर्भज मनुष्य	(घ) भविष्य काल	दृष्टि तीन
(e)	सिद्ध	(च) वर्तमान काल	दृष्टि एक
(f)	छठा गुणस्थान	(छ) योग 13	क्रियाएँ 21
(g)	सातवाँ गुणस्थान	(ज) दृष्टि तीन	हेतु 22
(h)	दसवाँ गुणस्थान	(झ) दृष्टि दो	उत्कृष्ट आकर्ष 9
(i)	ग्यारहवाँ गुणस्थान	(य) दृष्टि एक	54 जीव
(j)	तीसरा गुणस्थान	(र) योग 4	योग 10
(k)	चार अनुत्तर विमान	(ल) उत्कृष्ट आकर्ष 9	8,16,24 यावत् संख्यात द्रव्येन्द्रियाँ
(l)	बद्धेल्लगा	(व) 8,9,10 यावत् अनन्त द्रव्येन्द्रियाँ	वर्तमान काल
(m)	पुरेक्खड़ा	(क्ष) 8,16,24 यावत् संख्यात द्रव्येन्द्रियाँ	भविष्य काल
(n)	पहला देवलोक	(त्र) 9,10,11 यावत् अनन्त द्रव्येन्द्रियाँ	8,9,10 यावत् अनन्त द्रव्येन्द्रियाँ
(o)	तेजस्काय	(ज्ञ) योग 10	9,10,11 यावत् अनन्त द्रव्येन्द्रियाँ

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a)	मैं नामकर्म के उदय से बनने वाली शरीर की आकृति विशेष हूँ।	संस्थान
(b)	मैं जीव के अन्तःकरण की प्रवृत्ति हूँ।	दृष्टि
(c)	उत्तर वैक्रिय करुँ तो मेरी अवगाहना अधिकतम 1000 धनुष की है।	सातवीं नारकी

(d) मैं ऐसा युगलिक हूँ, जिसकी अधिकतम अवगाहना 800 धनुष है। अन्तर्द्वीपज

(e) मुझमें समुद्घात नहीं होती है। सिद्ध भगवान

(f) मैं यदि वैक्रिय करुँ तो सबसे अधिक अवगाहना मेरी होती है। गर्भजमनुष्य

(g) मेरा नाम अधःप्रवृत्तकरण भी है। यथाप्रवृत्त करण/पूर्वप्रवृत्तकरण

(h) मुझमें अनन्तानुबंधी कषाय का उदय व दर्शनत्रिक का उपशम होता है। सास्वादन सम्यग्दृष्टि गुण.

(i) मैं ऐसा भाव हूँ जो संसारी व सिद्ध दोनों में मिलता हूँ। पारिणामिक भाव

(j) मेरे उदय से साधु को दो परीषह होते हैं। ज्ञानावरणीय कर्म

(k) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ जिसमें 18 लाख जीव योनियाँ पाई जाती हैं। 5वाँ गुणस्थान

(l) मैं ऐसा स्थान हूँ जहाँ एक बार आने के बाद दुबारा द्रव्येन्द्रियाँ नहीं होती। सर्वार्थ सिद्ध विमान

(m) मुझमें 6 द्रव्येन्द्रियाँ होती हैं। चतुरिन्द्रिय

(n) मैं अभी देव नहीं हूँ, किन्तु भविष्य में देव बनूँगा। भव्य-द्रव्य देव

(o) मैं पहले देवलोक से लेकर सर्वार्थ सिद्ध देव में उत्पन्न हो सकने वाला साधु हूँ। अविराधक साधु/आराधक साधु

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2=(16)**

(a) असन्नी मनुष्य में मिलने वाले चार उपयोग लिखिए।
असन्नी मनुष्य में उपयोग पावे चार-मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, चक्षु दर्शन और अचक्षु दर्शन।

(b) दसवें गुणस्थान में कितने कर्मों की उदीरणा होती हैं ?
दसवें गुणस्थान में छह या पाँच कर्मों की उदीरणा (छह की हो तो आयु और वेदनीय इन दो को छोड़ना और पाँच की हो तो मोहनीय भी छोड़ देना)।

(c) एक-एक नारकी का नेरयिक चार अनुत्तर विमान पणे भविष्य में कितनी द्रव्येन्द्रियाँ करेंगे ?
भविष्य में कोई करेंगे, कोई नहीं करेंगे। जो करेंगे वे चार अनुत्तर विमान रूप में आठ अथवा सोलह करेंगे।

(d) कषाय रहते कौन-कौनसी आत्मा की नियमा है ?
5 (द्रव्य, योग, उपयोग, दर्शन, वीर्य)।

(e) ज्ञान आत्मा से कषाय आत्मा कितनी गुणा है ? कषाय आत्मा से विशेषाधिक कौनसी आत्मा है ?
कषाय आत्मा वाले अनन्त गुणा, कषाय आत्मा से योग आत्मा वाले विशेषाधिक।

(f) अविराधक श्रावक मरकर कहाँ उत्पन्न होते हैं ?
जघन्य पहले देवलोक में, उत्कृष्ट बारहवें देवलोक में उत्पन्न होते हैं।

(g) किल्विषी भावना वाले मरकर कहाँ उत्पन्न होते हैं ?
जघन्य भवनपति में, उकृष्ट छठे देवलोक में उत्पन्न होते हैं।

(h) पाँच पदवियों में से किन्ही दो पदवियों के नाम लिखिए।
इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश, लोकपाल और अहमिन्द।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3=(24)**

(a) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के सभी भेदों की उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।
सभी की स्थिति जघन्य-अन्तर्मुहूर्त। उत्कृष्ट-जलचर की एक करोड़ पूर्व। स्थलचर की तीन पल्योपम। खेचर की पल्योपम के असंख्यातवें भाग। उरपरिसर्प और भुजपरिसर्प की एक-एक करोड़ पूर्व की।

(b) सातवें गुणस्थान से छठे गुणस्थान में जो छह क्रियाएँ अधिक मिलती हैं, उनके नाम लिखिए।
काइया, अहिगरणिया, पाउसिया, पारियावणिया, पाणाइवाइया और आरम्भिया ये छह क्रियाएँ।

.(c) 57 हेतु कौनसे हैं ? तीसरे गुणस्थान में कितने हेतु मिलते हैं ?
हेतु सत्तावन होते हैं- 5 मिथ्यात्व, 25 कषाय, 15 योग और 12 अव्रत (6 काय 5 इन्द्रिय 1 मन)। तीसरे गुणस्थान में सत्तावन में से पाँच-मिथ्यात्व, आहारक, आहारक-मिश्र, अनन्तानुबन्धी चतुष्क, औदारिक-मिश्र, वैक्रिय-मिश्र और कार्मण काय योग- इन चौदह के सिवाय तियालीस हेतु पाये जाते हैं।

(d) पहले गुणस्थान की आगति-गति मार्गणा लिखिए।
पहले गुणस्थान में आगति मार्गणा पाँच (2,3,4,5,6) गति मार्गणा चार (3,4,5,7)।

(e) एक एवं अनेक भवों की अपेक्षा दूसरे गुणस्थान का आकर्ष लिखिए।
दूसरा गुणस्थान एक भव की अपेक्षा जघन्य एक बार, उत्कृष्ट दो बार और अनेक भवों की अपेक्षा जघन्य दो बार, उत्कृष्ट पाँच बार प्राप्त हो सकता है।

(f) चौथे एवं बारहवें गुणस्थान का जघन्य, उत्कृष्ट अन्तर लिखिए।
चौथे गुणस्थान-जघन्य-एक समय, उत्कृष्ट- देशोन अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल।
बारहवें गुणस्थान का अन्तर नहीं होता है।

(g) चार अनुत्तर विमान के बहुत देवों की स्वस्थानपणे तीनों काल की द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।
चार अनुत्तर विमान के बहुत देवों ने स्वस्थान की अपेक्षा द्रव्येन्द्रियाँ अतीत काल में असंख्यात की, वर्तमान में असंख्यात हैं और भविष्य में असंख्यात करेंगे।

(h) एक-एक नारकी के नैरयिक की संज्ञी मनुष्यपणे तीनों काल की द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।
एक-एक नारकी के नैरयिक ने संज्ञी मनुष्य रूप में द्रव्येन्द्रियाँ अतीत काल में अनन्त कीं, वर्तमान काल में नहीं है और भविष्य काल में नियमपूर्वक 8 या 16 या 24 यावत् संख्यात, असंख्यात, अनन्त करेंगे।

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) जीवाभिगम सूत्र की प्रथम प्रतिपत्ति में ये दो अंतिम द्वार नहीं है-
(क) कषाय और प्राण (ख) कषाय और योग
(ग) लेश्या और प्राण (घ) प्राण और योग (घ)

(b) नव लोकान्तिक देवों की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट 8 सागरोपम की बताई गई है-
(क) भगवती सूत्र में (ख) जीवाजीवाभिगम सूत्र में
(ग) अनुत्तरौपपातिक सूत्र (घ) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में (क)

(c) रवेचर की उत्कृष्ट अवगाहना होती है-
(क) 1000 योजन (ख) 6 काउ
(ग) प्रत्येक धनुष (घ) प्रत्येक गाउ (ग)

(d) इस गुणस्थान को अपूर्वकरण गुणस्थान भी कहते हैं-
(क) विरताविरत गुणस्थान (ख) प्रमत्तसंयत गुणस्थान
(ग) अप्रमत्तसंयत गुणस्थान (घ) निवृत्ति बादर गुणस्थान (घ)

(e) जिस भव में उपशम श्रेणि होती है उस भव में क्षपक श्रेणि नहीं करता, यह मान्यता प्रदान करने वाला शास्त्र है -
(क) कर्मग्रन्थ (ख) भगवती सूत्र
(ग) कम्मपयड़ी (घ) पंचसंग्रह (ख)

(f) शुक्लध्यान का बोल पाया जाता है -
(क) चौथें से सातवें गुणस्थान में (ख) आठवें गुणस्थान में
(ग) बारहवें गुणस्थान में (घ) तेरहवें गुणस्थान में (ख)

(g) नवें गुणस्थान में क्रियायें पायी जाती हैं-
(क) 24 (ख) 21
(ग) 15 (घ) 14 (ग)

(h) छठे गुणस्थान में कारण होते हैं-
(क) 5 (ख) 4
(ग) 3 (घ) 2 (ख)

(i) छह द्रव्येन्द्रियाँ होती हैं-
(क) एकेन्द्रिय में (ख) द्वीन्द्रिय में
(ग) त्रीन्द्रिय में (घ) चतुरिन्द्रिय में (घ)

(j) जो जीव केवली की आगति में सम्मिलित है वह कितनी द्रव्येन्द्रियां करके मोक्ष में जा सकता है-
(क) 08 (ख) 06
(ग) 04 (घ) 02 (क)

(k) पुरेक्खड़ा काल को सूचित करता है-
(क) अतीत (ख) वर्तमान
(ग) भविष्य (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(l) भगवती सूत्र के किस शतक में आत्मा का थोकड़ा चलता है-
(क) 10 वें में (ख) 12 वें में
(ग) 25 वें में (घ) 11 वें में (क)

(m) यह आत्मा सब जीवों में होती है-
(क) वीर्यात्मा (ख) द्रव्यात्मा
(ग) कषायात्मा (घ) चारित्रात्मा (ख)

(n) अविराधक साधु मरकर उत्कृष्ट कहां उत्पन्न होते है-
(क) नववें ग्रैवेयक में (ख) पहले देवलोक में
(ग) सर्वार्थ सिद्ध में (घ) बारहवें देवलोक में (ग)

(o) असंयत भव्य द्रव्य देव के थोकड़े का वर्णन भगवती सूत्र के किस उद्देशक में मिलता है-
(क) दूसरे में (ख) दसवें में
(ग) नववें में (घ) सातवें में (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) नवलोकान्तिक देवों की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट 8 सागरोपम की जीवाभिगम सूत्र की प्रथम प्रतिपत्ति में बताई गई है। (नहीं)

(b) वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट स्थिति 10 हजार वर्ष की है। (हाँ)

(c) स्थलचर की उत्कृष्ट अवगाहना 6 गाउ नहीं हैं। (नहीं)

(d) जीव के परिणाम विशेष को कारण कहते हैं। (नहीं)

(e) जिन्होंने निगोद को छोड़कर दूसरी जगह एक बार भी जन्म ग्रहण कर लिया है वें सभी व्यवहार राशि के जीव हैं। (हाँ)

(f) छठे गुणस्थान का आराधक जघन्य उसी भव में, मध्यम तीसरे भव में उत्कृष्ट सात-आठ भव में मोक्ष जाता है। (नहीं)

(g) भगवती सूत्र के अनुसार जिस भव में उपशम श्रेणि होती हैं, उस भव में जीव क्षपक श्रेणि नहीं करता हैं। (हाँ)

(h) ग्यारहवें गुणस्थान में काल करने वाला जीव 33 सागरोपम की ही स्थिति पाता है। (हाँ)

(i) पन्नवणा सूत्र के 15 वें पद में आठ द्रव्येन्द्रिय का अधिकार नहीं चलता है। (नहीं)

(j) पहले देवलोक से नवग्रैवेयक तक के एक-एक देव में वर्तमान में परस्थान की अपेक्षा द्रव्येन्द्रियाँ नहीं होती हैं। (हाँ)

(k) चार अनुत्तर विमान के देवता भविष्य में 16 द्रव्येन्द्रियाँ करके मोक्ष में जा सकते हैं। (हाँ)

(l) कषाय आत्मा में ज्ञान आत्मा की नियमा तथा ज्ञान आत्मा में कषाय आत्मा की भजना है। (नहीं)

(m) लब्धिवीर्य के कारण जो उत्थान,बल,पुरुषकार-पराक्रम होता है,उसे करणवीर्य कहते हैं। (हाँ)

(n) अविराधक श्रावक मरकर उत्कृष्ट 12 वें देवलोक में उत्पन्न होते हैं। (हाँ)

(o) जो चारित्र के परिणाम से अशून्य हो, वह असंयत कहलाता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	आहार	(क) 4 द्रव्येन्द्रिय	288
(b)	अप्काय	(ख) 24 क्रिया	7000 वर्ष
(c)	भुजपरिसर्प	(ग) वर्तमान में असंख्यात द्रव्येन्द्रियाँ	एक करोड़ पूर्व
(d)	तीसरा गुणस्थान	(घ) 14 क्रिया	24 क्रिया
(e)	दसवाँ गुणस्थान	(च) वेदनीय कर्म	14 क्रिया
(f)	चर्या	(छ) मोहनीय कर्म	वेदनीय कर्म
(g)	निषद्या	(ज) नववां ग्रैवेयक	मोहनीय कर्म
(h)	चौदहवाँ गुणस्थान	(झ) पहला देवलोक	अनाहारक
(i)	त्रीन्द्रिय	(य) 7000 वर्ष	4 द्रव्येन्द्रिय
(j)	सर्वार्थसिद्ध में वर्तमान में द्रव्येन्द्रियाँ	(र) 288	संख्यात
(k)	वनस्पतिकाय	(ल) एक करोड़ पूर्व	वर्तमान में असंख्यात द्रव्येन्द्रियाँ
(l)	कषाय आत्मा	(व) संख्यात	पहले से दसवाँ गुणस्थान
(m)	चारित्र आत्मा	(क्ष) अनाहारक	छठे से चौदहवाँ गुणस्थान
(n)	असंयत भव्य द्रव्य देव	(त्र) पहले से दसवाँ गुणस्थान	नववां ग्रैवेयक
(o)	कान्दर्पिक साधु	(ज्ञ) छठे से चौदहवाँ गुणस्थान	पहला देवलोक

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(a)	मुझ में पाँच योग पाते हैं।	वायुकाय
(b)	मेरी गति केवल तिर्यञ्च गति हैं।	सातवीं नारकी
(c)	मुझमें केवल दो उपयोग पाते हैं।	सिद्ध भगवान
(d)	मेरा द्वितीय नाम निवृत्तिकरण है।	अपूर्वकरण
(e)	मुझसे गिरने वाले को सास्वादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थान आ सकता है।	उपशम समकित
(f)	मुझको प्राप्त करते ही सतरह प्रकार का संयम पालन होता हैं।	प्रमत्त संयत गुणस्थान
(g)	मुझमें 21 क्रियायें पाती हैं।	प्रमत्त संयत गुणस्थान
(h)	पहले से तीसरे गुणस्थान तक मार्गस्थ नहीं होने के कारण मैं नहीं पाया जाता हूँ।	परीषह
(i)	मुझमें एक द्रव्येन्द्रिय ही पायी जाती हैं।	स्थावर
(j)	मुझको अप्रमत्त और आराधक साधु-साध्वी ही प्राप्त कर सकते हैं।	पाँच अनुत्तर विमान
(k)	मैं भविष्य में आठ द्रव्येन्द्रियां ही करूँगा।	सर्वार्थ सिद्ध
(l)	मैं सभी संसारी जीवों में रहने वाली आत्मा हूँ।	वीर्यात्मा
(m)	मुझमें दो आत्मा की नियमा और पाँच आत्मा की भजना है।	उपयोग आत्मा
(n)	मैं उत्कृष्ट आठवें देवलोक में उत्पन्न होता हूँ।	सन्नी तिर्यञ्च
(o)	भगवती सूत्र के शतक प्रथम उद्देशक द्वितीय में मेरा वर्णन मिलता है।	असंयत भव्य द्रव्य

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2=(16)**

(a) पाँच स्थावर तथा असन्नी मनुष्य में पाये जाने वाले समुद्घात के नाम लिखिए।

उ. चार स्थावर (वायुकाय छोडकर) और असन्नी मनुष्य में तीन-वेदनीय, कषाय और मारणान्तिक समुद्घात पावे। वायुकाय में चार समुद्घात पावे उपर्युक्त 3 और चौथा वैक्रिय समुद्घात।

(b) युगलिक मनुष्यों की उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

उ. 5 हेमवत और 5 ऐरण्यवत की स्थिति एक पल्योपम
5 हरिवास और 5 रम्यवास की स्थिति दो पल्योपम
5 देवकुरु और 5 उत्तरकुरु की स्थिति तीन पल्योपम
56 अन्तद्वीपों की स्थिति पल्योपम से असंख्यातवें भाग।

(c) 'द्वितीयोपशम' का अर्थ लिखिए।

उ. जो उपशम समकित श्रेणि सहित प्राप्त हो, चाहे वह पहली, दूसरी, तीसरी बार ही क्यों न प्राप्त हो।

(d) 'गुणसंक्रमण' की परिभाषा लिखिए।

उ. पहले बांधी हुई अशुभ प्रकृतियों को वर्तमान में बंधने वाली शुभ प्रकृतियों के रूप में असंख्यात गुणित क्रम से परिवर्तित करना 'गुण संक्रमण' कहलाता है।

(e) दूसरे गुणस्थान में जीव के कौन-कौन से छह भेद पाये जाते हैं ?

उ. दूसरे गुणस्थान में जीव के छः भेद- बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, इन का अपर्याप्त, संज्ञी पंचेन्द्रिय का पर्याप्त और अपर्याप्त।

(f) संज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय की एक-एक जीव की त्रिकालवर्ती द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।

उ. अतीत काल में अनन्त, वर्तमान काल में आठ और भविष्य में आठ अथवा नौ यावत् संख्यात, असंख्यात, अनन्त करेंगे।

(g) 'करणवीर्य' किसे कहते हैं ?

उ. लब्धिवीर्य के कारण जो उत्थान बल पुरुषकार पराक्रम होता है, उसे करण वीर्य कहते हैं।

(h) कैसे साधु पाँच पदवियों में से कोई भी एक पदवी प्राप्त करते हैं ?

उ. जो साधु मूल गुण व उत्तर गुण दोनों की शुद्धि कर आराधक हो जाते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) संहनन द्वार की परिभाषा तथा उसके भेदों का नाम लिखिए।

उ. हड्डियों की रचना विशेष को संहनन कहते हैं। इसके छः भेद हैं- 1. वज्रऋषभ नाराच संहनन, 2. ऋषभ नाराच संहनन, 3. नाराच संहनन, 4. अर्धनाराच संहनन, 5. कीलिका संहनन और 6. सेवार्त्तक संहनन

(b) तीन विकलेन्द्रिय में पाये जाने वाले प्राणों के नाम लिखिए।

उ. बेइन्द्रिय प्राण पावे 6- रसनेन्द्रिय बल प्राण, स्पर्शनेन्द्रियबल, वचनबल, कायबल, श्वासोच्छ्वास और आयुष्यबल प्राण।

तेइन्द्रिय में प्राण पावे 7- उपर्युक्त 6 और घ्राणेन्द्रिय बल प्राण।

चौरेन्द्रिय में प्राण पावे 8- उपर्युक्त 7 और चक्षुरिन्द्रिय बल प्राण।

(c) सन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना लिखिए।

उ. जलचर की 1000 योजन, स्थलचर की-6 गाउ, खेचर की- प्रत्येक धनुष, उरपरिसर्प की-1000 योजन और भुजपरिसर्प की प्रत्येक गाउ।

(d) गुणस्थान स्वरूप के लेश्या द्वार को चौदह गुणस्थानों की अपेक्षा से लिखिए।

उ. पहले से छठे गुणस्थान तक छ लेश्याएँ पाई जाती हैं। सातवें में तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्या पाई जाती है। आठवें से बारहवें में शुक्ल लेश्या, तेरहवें गुणस्थान में परम शुक्ल लेश्या पाई जाती है। चौदहवें गुणस्थान में लेश्या नहीं होती है।

(e) गुणस्थान स्वरूप के उपयोग द्वार के सन्दर्भ में दसवें गुणस्थान के विषय में भगवती सूत्र का मत लिखिए।

उ. गुणस्थान स्वरूप के उपयोग द्वार के सन्दर्भ में दसवें गुणस्थान के विषय में भगवती सूत्र में 4 ज्ञान के ही उपयोग बताये है।

भगवती सूत्र शतक 25 उद्देशक 7 में दसवें गुणस्थान में 4 ज्ञान के ही उपयोग बताये हैं, लेकिन क्षयोपशम की दृष्टि से 3 अनाकार उपयोग भी होते हैं। अतः क्षयोपशम की दृष्टि से 7 एवं प्रवृत्ति की दृष्टि से 7 उपयोग बोलना उचित प्रतीत होता है।

(f) चारित्र द्वार को चौदह गुणस्थानों की अपेक्षा से लिखिए।

उ. पहले से चौथे गुणस्थान तक चारित्र नहीं होता, पाँचवें गुणस्थान में देशचारित्र, छठे और सातवें गुणस्थान में तीन चारित्र होते हैं-सामायिक, छेदोपस्थापनीय और परिहार विशुद्धि। आठवें और

नौवें में दो चारित्र होते हैं- सामायिक और छेदोपस्थापनीय। दसवें गुणस्थान में सूक्ष्मसम्पराय चारित्र होता है। ग्यारहवें से चौदहवें गुणस्थान तक यथाख्यात चारित्र होता है।

(g) असुरकुमार देवता तथा पृथ्वी,पानी,वनस्पति के जीवों की त्रिकालवर्ती द्रव्येन्द्रियां लिखिए।

उ. असुरकुमार देवता ने अतीत काल में द्रव्येन्द्रियां अनन्त की। वर्तमान काल में आठ हैं और भविष्य में आठ, नौ अथवा दस यावत् संख्यात, असंख्यात, अनन्त करेंगे।

पृथ्वी,पानी,वनस्पति के एक-एक जीव ने अतीत काल में द्रव्येन्द्रियाँ अनन्त की। वर्तमान में एक द्रव्येन्द्रिय है और भविष्य में आठ अथवा नौ यावत् संख्यात, असंख्यात, अनन्त करेंगे।

(h) भावेन्द्रियां पाँच होते हुए भी द्रव्येन्द्रियां आठ होती हैं। क्यों ?

उ. नामकर्म के उदय से द्रव्येन्द्रियों की प्राप्ति होती है। श्रवण रूपी भाव एक समान होने पर भी द्रव्य रूप से कान दो हैं, इसी प्रकार आखें भी दो और नाक भी दो हैं। रसना और स्पर्शन इन्द्रिय भाव तथा द्रव्य दोनों की अपेक्षा एक-एक ही है। अतः भावेन्द्रिय पाँच होते हुए भी द्रव्येन्द्रियाँ आठ होती हैं।

कक्षा : पाँचवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) असन्नी खेचर की अवगाहना होती है-

(क) प्रत्येक योजन (ख) प्रत्येक धनुष

(ग) 1000 योजन (घ) 6 गाउ (ख)

(b) वैक्रिय समुद्घात होती है-

(क) सूक्ष्म वायुकाय अपर्याप्त (ख) अप्काय

(ग) बादर वायुकाय पर्याप्त (घ) पृथ्वीकाय (ग)

(c) चन्द्र विमान वासी देवों की जघन्य स्थिति होती है-

(क) पाव पल्योपम (ख) 10,000 वर्ष

(ग) करोड़ पूर्व झाझेरी (घ) 22 सागरोपम (क)

(d) कौनसा जीव अन्तर्मुहूर्त्त में केवली हो जाता है-

(क) क्षायिक समकिती (ख) क्षपक श्रेणी

(ग) उपशम श्रेणी (घ) अवधिज्ञानी (ख)

(e) अनुभूति में आने वाला उदय है-

(क) प्रदेश उदय (ख) विपाक उदय

(ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(f) कौनसे गुणस्थान से जीव उपशमक व क्षपक कहलाते हैं-

(क) 9वें (ख) 10वें

(ग) 11वें (घ) 12वें (क)

(g) 8 द्रव्येन्द्रिय का थोकड़ा कौनसे आगम में आता है-

(क) पन्नवणा-15 (ख) पन्नवणा पद-12

(ग) भगवती सूत्र (घ) उववाइय सूत्र (क)

(h) वर्तमान को कहते हैं-

(क) बद्धेल्लगा (ख) पुरेक्खड़ा

(ग) अतीत (घ) सभी (क)

(i) कषाय आत्मा में कितनी आत्मा की नियमा होती है-

(क) 2 (ख) 5

(ग) 3 (घ) 4 (ख)

(j) सबसे अधिक कौनसी आत्मा वाले जीव हैं-

(क) द्रव्य आत्मा (ख) कषाय आत्मा

(ग) चारित्र आत्मा (घ) वीर्य आत्मा (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) करोड़ पूर्व झाझेरी की स्थिति वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिय लब्धि का प्रयोग कर सकता है।(नहीं)
(b) सन्नी मनुष्य समुद्घात सहित मरण से ही मरते हैं। (नहीं)
(c) हेमवत की स्थिति 1 पल्योपम की होती है। (हाँ)
(d) सैद्धान्तिक मतानुसार अनादि मिथ्यादृष्टि जीव क्षयोपशम समकित ही प्राप्त करता है। (नहीं)
(e) उपशम श्रेणी वाला 8 से 11 गुणस्थान में चढ़ते हुए काल कर सकता है। (हाँ)
(f) तीर्थंकर श्रावक के व्रत ग्रहण नहीं करते हैं। (हाँ)
(g) वनस्पतिकाय में द्रव्येन्द्रियाँ वर्तमान की अपेक्षा अनन्त होती हैं। (नहीं)
(h) चार अनुत्तर विमान में रहा जीव पुनः चार अनुत्तर विमान में अधिकतम दो बार जा सकता है। (नहीं)
(i) विराधक श्रावक काल करके अधिकतम ज्योतिषी में उत्पन्न हो सकते हैं। (हाँ)
(j) जो चारित्र परिणाम से अशून्य हो, वह संयत कहलाता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	चमरेन्द्र जी	(क)क्षायिक व पारिणामिक	दक्षिण दिशा अधोलोक
(b)	बलीन्द्र जी	(ख) दक्षिण दिशा अधोलोक	उत्तर दिशा अधोलोक
(c)	बेइन्द्रिय	(ग) 13वाँ गुणस्थान	12 योजन
(d)	सिद्ध	(घ) आराधक	क्षायिक व पारिणामिक
(e)	अमर	(च) उत्तर दिशा अधोलोक	12वाँ गुणस्थान
(f)	अनाहारक	(छ) 6 द्रव्येन्द्रियाँ	13वाँ गुणस्थान
(g)	आभियोगिक साधु	(ज) 12 योजन	भवनपति
(h)	ज्ञान आत्मा	(झ) 12वाँ गुणस्थान	दूसरा, चौथा से चौदहवाँ गुण.
(i)	चौरेन्द्रिय	(य) दूसरा, चौथा से चौदहवाँ गुण.	6 द्रव्येन्द्रियाँ
(j)	अप्रमत्त अवस्था में काल करने वाला	(र) भवनपति	आराधक

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मुझमें द्रव्य प्राण नहीं पाये जाते। सिद्ध
(b) मैं गुणस्थान स्वरूप के थोकड़े का 21वें नम्बर का द्वार हूँ। ध्यान
(c) मेरा निरोध कर जीव चौदहवें गुणस्थान में जाता है। योग
(d) मुझमें अनादि अनन्त भंग पाया जाता है। अभवी
(e) मैं अशुभ प्रकृतियों के अनुभाग को प्रतिसमय अनन्त गुणहीन करने वाली लब्धि हूँ। क्षयोपशम लब्धि
(f) मैं सम्यक् दृष्टि के गुणस्थानों में व सिद्धों में ही मिलती हूँ। ज्ञान आत्मा
(g) मेरी आत्मा वाले जीव सबसे थोड़े हैं। चारित्र आत्मा
(h) मुझमें 4 आत्मा की नियमा व 3 आत्मा की भजना है। योग आत्मा
(i) मैं कषाय रहित चारित्र हूँ। यथाख्यात चारित्र
(j) मैं मिथ्यादृष्टि होकर भी ग्रैवेयक में उत्पन्न हो सकता हूँ। स्वलिंगी साधु

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 12x2 = (24)

(a) तीन विकलेन्द्रिय में पाये जाने वाले शरीर के नाम लिखिए।

उ. तीन विकलेन्द्रिय में औदारिक, तैजस और कार्मण तीन शरीर पाये जाते हैं।

(b) चौथी, पाँचवी नारकी की स्थिति लिखिए।

उ. चौथी नारकी की स्थिति- जघन्य 7 सागरोपम, उत्कृष्ट 10 सागरोपम।
पाँचवीं नारकी की स्थिति- जघन्य 10 सागरोपम, उत्कृष्ट 17 सागरोपम।

(c) च्यवन को परिभाषित कीजिए।

उ. जीव के वर्तमान-भव की पर्याय को छोड़ने को 'च्यवन' कहते हैं।

(d) प्रथम गुणस्थान का जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर लिखिए।

उ. प्रथम गुणस्थान का जघन्य - अन्तर्मुहूर्त्त और उत्कृष्ट छासठ सागरोपम झाझेरा है।

(e) 'स्थिति घात' को परिभाषित कीजिए।

उ. स्थिति घात- बंधे हुए ज्ञानावरणीय आदि 7कर्मों की बड़ी स्थिति को अपर्वतना कारण से छोटी करना 'स्थिति घात' है।

(f) पाँचवें व नवमें गुणस्थान की आगति मार्गणा लिखिए।

उ. पाँचवें गुणस्थान की आगति मार्गणा चार-1,3,4,6
नवमें गुणस्थान की आगति मार्गणा दो-8,10

(g) धर्मध्यान में गुणस्थानों को स्पष्ट कीजिए।

उ. चौथे, पाँचवें, छठे और सातवें गुणस्थान में धर्मध्यान पाया जाता है।

(h) एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों में वर्तमान भव की अपेक्षा से द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।

उ. एकेन्द्रिय में 1, द्वीन्द्रिय में 2, त्रीन्द्रिय में 4, चतुरिन्द्रिय में 6 तथा पंचेन्द्रिय में 8 द्रव्येन्द्रिया होती हैं।

(i) दर्शन आत्मा में नियमा-भजना लिखिए।

उ. दर्शन आत्मा में नियमा-2 (द्रव्य और उपयोग), भजना- 5 (कषाय, योग, ज्ञान, चारित्र, वीर्य)

(j) लब्धि वीर्य को परिभाषित कीजिए।

उ. लब्धि वीर्य-वीर्यान्तराय कर्म के क्षय या क्षयोपशम वाले आत्मा को जो वीर्य की लब्धि होती है यानी उनमें शक्ति रूप से जो वीर्य रहता है, उसे 'लब्धि वीर्य' कहते हैं।

(k) असंयत भव्य-द्रव्य-देवों का थोकड़ा कौनसे शास्त्र के कौनसे शतक उद्देशक से लिया गया है ?

उ. असंयत भव्य-द्रव्य-देवों का थोकड़ा श्री भगवती सूत्र के पहले शतक के दूसरे उद्देशक से लिया गया है।

(l) आजीविक मत को मानने वाले साधु मर कर कहाँ उत्पन्न होते हैं ?

उ. आजीविक मत को मानने वाले साधु मर कर जघन्य भवनपति में, उत्कृष्ट बारहवें देवलोक में उत्पन्न होते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 12x3=(36)

(a) संस्थान की परिभाषा तथा उसके भेदों के नाम लिखिए।

उ. नाम कर्म के उदय से बनने वाली शरीर की आकृति विशेष को 'संस्थान' कहते हैं।

भेद- 1. समचौरस, 2. न्यग्रोध परिमण्डल, 3. सादि, 4. वामन, 5. कुब्जक और 6. हुण्डक।

(b) पहले देवलोक की देवियों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

उ. परिगृहीता देवियों की स्थिति- जघन्य 1 पल्योपम, उत्कृष्ट 7 पल्योपम।

अपरिगृहीता देवियों की स्थिति- जघन्य 1 पल्योपम, उत्कृष्ट 50 पल्योपम।

(c) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना लिखिए।

उ. जलचर की 1000 योजन, स्थलचर की प्रत्येक (पृथक्त्व)गाउ। खेचर की प्रत्येक धनुष, उरपरिसर्प की प्रत्येक योजन और भुजपरिसर्प की प्रत्येक धनुष की।

(d) गुणस्थान स्वरूप के दण्डक द्वार को चौदह गुणस्थानों की अपेक्षा से लिखिए।

उ. पहले गुणस्थान में चौबीस दण्डक, दूसरे में चौबीस में से पाँच स्थावर को छोड़कर उन्नीस, तीसरे और चौथे में सोलह (उन्नीस में से तीन विकलेन्द्रिय को छोड़कर), पाँचवें में दो- संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य, छठे से चौदहवें गुणस्थान तक मनुष्य का एक दण्डक पाया जाता है।

(e) 13वें गुणस्थान में पाये जाने वाले 10 बोल लिखिए।

उ. 1. क्षायिक समकित, 2. शुक्ल ध्यान, 3. यथाख्यात चारित्र, 4. केवलज्ञान,
5. केवल दर्शन, 6. अनन्तदान लब्धि, 7. अनंतलाभ लब्धि, 8. अनंतभोग लब्धि
9. अनंत उपभोग लब्धि, 10. अनंतवीर्य लब्धि।

(f) द्वितीयोपशम के भंग उनकी स्थिति तथा गुणस्थान सहित लिखिए।

उ. सातों प्रकृतियों का उपशम- (4 से 11 गुणस्थान तक, स्थिति-जघन्य-उत्कृष्ट-अन्तर्मुहूर्त्त)

चार की विसंयोजना, तीन का उपशम-(4 से 11 गुणस्थान तक, स्थिति-जघन्य-उत्कृष्ट-अन्तर्मुहूर्त्त)

(g) प्रायोग्य लब्धि को स्पष्ट कीजिए।

उ. प्रायोग्य लब्धि- मनोयोग, वचनयोग और काय योग में से कोई भी एक योग में उपयोग हो, अन्तरंग कारणभूत अनुकम्पादि विशिष्ट गुण वाला हो।

(h) विसंयोजना का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ. विसंयोजना- जिसमें किसी प्रकार का उदय न हो, कर्म सत्ता में भी न हो, किन्तु कारण (मिथ्यात्व) उपस्थित होने पर जिसका पुनः बंध व उदय हो सके अर्थात् अस्थायी क्षय। विसंयोजना मात्र अनन्तानुबंधी चौक की ही होती है।

(i) नरकादि दुर्गतियों में आराधक साधु-साध्वी जन्म-मरण नहीं करते। कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ. क्योंकि आराधक साधु-साध्वी सन्नी मनुष्य और वैमानिक देव इन दो दण्डकों में ही अधिकतम 15 भव करते हैं, उसके पश्चात् मोक्ष में चले जाते हैं।

(j) वनस्पतिकाय में वर्तमान की अपेक्षा द्रव्येन्द्रियाँ असंख्यात क्यों मानीं ?स्पष्ट कीजिए।

उ. वनस्पति में सूक्ष्म और साधारण निगोद के जीव यद्यपि अनन्त होते हैं। किन्तु उन जीवों के औदारिक शरीर कुल असंख्यात ही होते हैं। इस कारण से वनस्पतिकाय के जीवों में द्रव्येन्द्रियाँ वर्तमान की अपेक्षा असंख्यात ही मानी जाती है।

(k) एक जीव की अपेक्षा 5 अनुत्तर विमान में तीनों कालों की अपेक्षा से द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।

उ. चार अनुत्तर विमान के एक-एक देवता ने द्रव्येन्द्रियाँ अतीत में अनन्त की, वर्तमान में आठ हैं और भविष्य में आठ अथवा सौलह अथवा चौबीस यावत् संख्यात करेंगे।

सर्वार्थ सिद्ध के एक-एक देवता ने द्रव्येन्द्रियाँ अतीत में अनन्त की, वर्तमान में आठ है और भविष्य में भी आठ ही करेंगे।

(l) कौनसे जीव में भविष्य की अपेक्षा 8 द्रव्येन्द्रियाँ मिलती हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उ. जो जीव केवली की आगति (108) में सम्मिलित हैं, वे 8 द्रव्येन्द्रियाँ करके अर्थात् मनुष्य भव पाकर मोक्ष में जा सकते हैं। उन जीवों में भविष्य की अपेक्षा 8 द्रव्येन्द्रियाँ मिलती हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : पाँचवीं - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

कक्षा : पाँचवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) वाणव्यंतर देवों का दण्डक है-

(क) 20वाँ (ख) 21वाँ

(ग) 22वाँ (घ) 23वाँ (ग)

(b) जीव के वर्तमान भव की पर्याय छोड़ने को कहते हैं-

(क) उपपात (ख) मरण

(ग) च्यवन (घ) गति-आगति (ग)

(c) समकित मोहनीय का उदय रहता है -

(क) क्षायिक समकित में (ख) क्षयोपशम समकित में

(ग) उपशम समकित में (घ) सास्वादन समकित में (ख)

(d) चल, मल व अगाढ़ दोष जिसमें लगते है, उसे कहते हैं-

(क) समकित मोहनीय (ख) मिथ्यात्व मोहनीय

(ग) मिश्र मोहनीय (घ) मोहनीय कर्म (क)

(e) आठ द्रव्येन्द्रिय के थोकड़े का वर्णन चलता है-

(क) पन्नवणा पद-13 (ख) पन्नवणा पद-14

(ग) पन्नवणा पद-15 (घ) पन्नवणा पद-16 (ग)

(f) एक बार चार अनुत्तर विमान में उत्पन्न जीव भविष्य में अधिकतम कितने भव करता है-

(क) 8 भव (ख) 13 भव

(ग) 15 भव (घ) 03 भव (ख)

(g) 8 आत्मा में 5वाँ भेद हैं-

(क) उपयोग (ख) ज्ञान

(ग) दर्शन (घ) चारित्र (ख)

(h) कषाय आत्मा में कितनी आत्मा की नियमा होती है-

(क) 2 (ख) 3

(ग) 4 (घ) 5 (घ)

(i) विराधक श्रावक काल करके उत्कृष्ट कहाँ तक जा सकता है-

(क) भवनपति (ख) ज्योतिषी

(ग) लोकान्तिक (घ) 2 देवलोक तक (ख)

(j) जो चारित्र के परिणाम से शून्य हो, वह कहलाता है-

(क) संयत (ख) संयतासंयत

(ग) असंयत (घ) मिथ्यादृष्टि (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) आराधक साधु पदवी भी पा सकते हैं। (हाँ)

(b) हंसी मजाक नहीं करने वाले साधु को 'कान्दर्पिक कहाँ जाता है। (नहीं)

(c) नियमा का अर्थ विकल्प नहीं है। (हाँ)

(d) भगवती सूत्र शतक 12 उद्देशक 10 में 8 आत्मा का वर्णन चलता है। (हाँ)

(e) त्रीन्द्रिय के तीन द्रव्येन्द्रियाँ होती हैं। (नहीं)

(f) चार अनुत्तर के देवता भविष्य में असंख्यात द्रव्येन्द्रियाँ कर सकते हैं। (हाँ)

(g) उसी भव में मोक्ष प्राप्त करने वाला जीव छठें गुणस्थान में आता ही है। (नहीं)

(h) सत्कार-पुरस्कार 19वाँ परीषह है। (हाँ)

(i) चन्द्र और तारा विमानवासी देवों जघन्य स्थिति पाव पल्योपम नहीं होती है। (हाँ)

(j) नव लोकान्तिक की स्थिति जघन्य व उत्कृष्ट 8 पल्योपम होती है। (हाँ)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मैं काल करके सर्वार्थसिद्ध में उत्पन्न हो सकता हूँ। अविराधक साधु/आराधक साधु

(b) मुझमें चार आत्मा की नियमा होती है। योग आत्मा

(c) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 3 अहोरात्रि की है। तेउकाय

(d) मेरे में पाँच शरीर हो सकते हैं। कर्मभूमिज मनुष्य/ गर्भज मनुष्य

(e) मैं वैक्रिय करुँ तो उत्कृष्ट 1 लाख योजन झाझेरी कर सकता हूँ। कर्मभूमिज मनुष्य/ गर्भज मनुष्य

(f) मेरे अनुसार सम्यक्त्व प्राप्ति पूर्व 5 लब्धियाँ करना आवश्यक है। लब्धिसार

(g) नालिकेर द्वीप के मनुष्य का दृष्टांत मुझमें मिलता है। पंचसग्रह/कर्मग्रन्थ

(h) मैं उपशम श्रेणि सहित ही होता हूँ। द्वितीयोपशम

(i) मैं एक ऐसा थोकड़ा हूँ, जिसमें इन्द्रियों का कथन क्षयोपशम से होने वाली भावेन्द्रिय की अपेक्षा से बतलाया है। 25 बोल

(j) जो मेरी आगति में आ जाता है, वह 8 द्रव्येन्द्रियाँ करके मोक्ष जाता है। केवली

प्र.4 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। 14x2=(28)

(a) असंयत भव्य-द्रव्य देव किसे कहते हैं ?

उ. जो चारित्र के परिणाम से शून्य हो, वह असंयत कहलाता है। जो भविष्य में देव होने योग्य है, वह 'भव्य-द्रव्य-देव' कहलाता है। अर्थात् जो चारित्र पर्याय से रहित है और इस समय तक देव नहीं बना है, किन्तु आगे देव बनने वाला है, वह 'असंयत भव्य-द्रव्य' देव है।

(b) ज्ञान व चारित्र आत्मा में कौनसी आत्मा की नियमा होती है ?

उ. ज्ञान आत्मा में 3- द्रव्य, दर्शन, उपयोग की।

चारित्र आत्मा में 5- द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन, वीर्य।

(c) युगलिक मनुष्य वैक्रिय शरीर क्यों नहीं बना सकते, कारण सहित लिखिए।

उ. करोड़ पूर्व या इससे कम स्थिति वाले सन्नी पर्याप्त मनुष्य ही वैक्रिय शरीर बना सकते हैं। इससे ऊपर की स्थिति वाले नहीं। युगलिकों की स्थिति करोड़ पूर्व से अधिक ही होती है।

(d) सिद्ध भगवान की अवगाहना लिखिए।

उ. आत्मा-प्रदेशों की अवगाहना जघन्य एक हाथ आठ अंगुल, मध्यम चार हाथ सोलह अंगुल और उत्कृष्ट 333 धनुष-32 अंगुल।

(e) युगलिक मनुष्यों की अवगाहना लिखिए।

उ. हेमवत और ऐरण्यवत में एक गाउ। हरिवास और रम्यक्वास में दो गाउ। देवकुरु और उत्तरकुरु में तीन गाउ। अन्तर्द्वीप में आठ सौ धनुष। इनमें जघन्य देशऊणी और उत्कृष्ट परिपूर्ण होती है।

(f) तीन लब्धियों में प्रायोग्य लब्धि को स्पष्ट कीजिए।

उ. प्रायोग्य लब्धि- मनोयोग, वचनयोग और काययोग में से कोई भी एक योग में उपयोग हो, अन्तरंग कारणभूत अनुकम्पादि विशिष्ट गुण वाला हो।

(g) द्वितीयोपशम के भांगे लिखिए।

उ. सातों प्रकृतियों का उपशम- (4 से 11 गुणस्थान तक, स्थिति- जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त)

चार की विसंयोजना, तीन का उपशम- (4 से 11 गुणस्थान तक, स्थिति- जघन्य-उत्कृष्ट अर्न्तमूर्त्त)

(h) कौनसे गुणस्थान से सात बोलों का बंध नहीं होता ? सात बोल लिखिए।

उ. चतुर्थ गुणस्थान में सात बोलों का बंध नहीं होता।

सात बोल- 1. नारकी 2. तिर्यंच 3. भवनपति 4. वाणव्यन्तर 5. ज्योतिषी 6. स्त्रीवेद और 7. नपुंसकवेद।

(i) निर्जरा द्वार लिखिए।

उ. पहले गुणस्थान से दसवें गुणस्थान तक आठों कर्मों की निर्जरा होती है। ग्यारहवें तथा बारहवें गुणस्थान में मोहनीय कर्म के सिवाय सात कर्मों की निर्जरा होती है। तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान में चार अघाती कर्मों की निर्जरा होती है।

(j) चौथे गुणस्थान की आगति व गति मार्गणा लिखिए।

उ. चौथे गुणस्थान की आगति मार्गणा नौ (1,3,5,6,7,8,9,10,11)

गति मार्गणा पाँच (1,2,3,5,7)

(k) कोई मिथ्या दृष्टि जीव सीधा साधु बन सकता है क्या? स्पष्ट कीजिए।

उ. यदि कोई पडिवाई मिथ्यादृष्टि है तो वह विशुद्धि के बल पर सीधा सातवें गुणस्थान में जा सकता है। गति मार्गणा से यह स्पष्ट है। अतः मिथ्या दृष्टि जीव सीधा साधु भी बन सकता है।

(l) नवग्रैवेयक के एक-एक देवता की वैमानिक व मनुष्य के सिवाय भविष्यत् काल की अपेक्षा से द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।

उ. भविष्य में कोई करेंगे, कोई नहीं करेंगे। जो करेंगे वे एकेन्द्रिय में 1,2,3, द्वीन्द्रिय में 2,4,6, त्रीन्द्रिय में 4,8,12, चतुरिन्द्रिय में 6,12,18 और पंचेन्द्रिय में 8,16,24 यावत् संख्यात, असंख्यात, अनन्त करेंगे।

(m) वनस्पतिकाय में जीव अनन्त होते हुए भी वर्तमान में द्रव्येन्द्रियाँ असंख्यात क्यों बतायी ? स्पष्ट कीजिए।

उ. वनस्पतिकाय में सूक्ष्म व साधारण निगोद के जीव यद्यपि अनन्त होते हैं। किन्तु उन जीवों के औदारिक शरीर कुल असंख्यात ही होते हैं। इस कारण से वनस्पतिकाय के जीवों में द्रव्येन्द्रियाँ वर्तमान की अपेक्षा असंख्यात ही मानी जाती है।

(n) चार अनुत्तर विमान में गये जीव के भविष्यत् काल में अधिकतम भव व द्रव्येन्द्रियाँ कितनी होती हैं ?

उ. अधिकतम 13 भव तथा 104 द्रव्येन्द्रियाँ होती हैं।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) उत्कृष्ट पहला देवलोक साधु की गति किस अपेक्षा से बताई है, स्पष्ट कीजिए।

उ. जो मूल गुण व उत्तर गुण में दोष लगाने के बाद उनकी शुद्धि नहीं कर पाते, आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रायश्चित्त आदि द्वारा अपने आपको शुद्ध नहीं बना पाते।

(b) आत्मा-8 के थोकड़े का अल्पबहुत्व द्वार लिखिए।

उ. 1. सबसे थोड़े चारित्र आत्मा वाले, 2. उससे ज्ञान आत्मा वाले अनन्त गुणा,

3. उससे कषाय आत्मा वाले अनन्त गुणा, 4. उससे योग आत्मा वाले विशेषाधिक,

5. उससे वीर्य आत्मा वाले विशेषाधिक, 6,7,8 उससे द्रव्य आत्मा वाले, उपयोग आत्मा वाले, दर्शन आत्मा वाले परस्पर तुल्य (बराबर), किन्तु वीर्य आत्मा वाले से विशेषाधिक हैं।

(c) गुणस्थान द्वार का उदीरणा द्वार लिखिए।

उ. पहले से लेकर छठे गुणस्थान तक सात-आठ-छह कर्मों की उदीरणा होती है (सात की उदीरणा हो तो आयु कर्म की नहीं होती तथा छह की उदीरणा हो तो आयु व वेदनीय दोनों को छोड़ना) सातवें, आठवें और नौवें गुणस्थान में छह कर्मों की उदीरणा (आयु और वेदनीय छोड़कर), दसवें गुणस्थान में छह या पाँच कर्मों की उदीरणा (छह की हो तो पूर्वोक्त दो छोड़ना और पाँच की हो तो मोहनीय भी छोड़ देना) ग्यारहवें गुणस्थान में पाँच कर्मों की उदीरणा, बारहवें गुणस्थान में पूर्वोक्त पाँच कर्मों की या नाम और गोत्र इन दो कर्मों की उदीरणा होती हैं। तेरहवें गुणस्थान में पूर्वोक्त दो की उदीरणा होती है। चौदहवें गुणस्थान में उदीरणा नहीं होती।

(d) अन्तर किसे कहते हैं? 12, 13 व 14वें गुणस्थान का अन्तर क्यों नहीं ?

उ. किसी गुणस्थान को एक बार छोड़ कर दूसरी बार फिर उसी गुणस्थान में आने तक जितना काल बीच में व्यतीत होता है, उसे 'अन्तर' कहते हैं।

12वें, 13वें और 14वें गुणस्थान वाले जीव इन गुणस्थानों से नीचे गिरते ही नहीं हैं। एक बार चढ़कर सिद्ध हो जाते हैं। अतएव इनका कुछ भी अन्तर नहीं है।

(e) दूसरे गुणस्थान से तीसरे गुणस्थान में जीव असंख्यात गुणा होते हैं क्यो? स्पष्ट कीजिए।

उ. यद्यपि दूसरा और तीसरा गुणस्थान चारों गतियों में पाया जाता है, परन्तु दूसरे की अपेक्षा तीसरे की स्थिति संख्यात गुणी है, तथा दूसरा गुणस्थान तो मात्र उपशम समकित से गिरते हुए ही आ सकता है, किन्तु मिश्र गुणस्थान मिथ्यात्व से चढ़ते हुए अथवा त्रिपुंज सहित प्रथमोपशम से गिरते समय अथवा क्षयोपशम से गिरते हुए चौथे, पाँचवें, छठे किसी भी गुणस्थान से आ सकता है। इस कारण तीसरे गुणस्थान वाले जीव दूसरे से असंख्यात गुणा है।

(f) गुणस्थानों में भाव द्वार को लिखिए।

उ. पहले, दूसरे और तीसरे गुणस्थान में- औदयिक, क्षायोपशमिक और पारिणामिक- ये तीन भाव होते हैं। चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक उपशम श्रेणी वालों में पाँच भाव होते हैं। चौथे से बारहवें गुणस्थान तक क्षपक श्रेणी वालों में औपशमिक छोड़कर शेष चारों भाव पाये जाते हैं। तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान में औदयिक, क्षायिक और पारिणामिक भाव- ये तीन भाव होते हैं तथा सिद्धों में क्षायिक और पारिणामिक- ये दो भाव होते हैं।

(g) समुद्घात की परिभाषा एवं भेद लिखिए।

उ. सम+उद्+घात, इन तीनों से मिलकर समुद्घात शब्द बनता है। एकीभाव पूर्वक प्रबलता से कर्मों का घात करना, समुद्घात कहलाता है।

इसके सात भेद है- 1. वेदनीय 2. कषाय 3. मारणान्तिक 4. वैक्रिय
5. तैजस 6. आहारक 7. केवली समुद्घात

(h) बहुत से सन्नी मनुष्य 4 व 5 अनुत्तर विमानपने तीनों कालों की अपेक्षा से द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।

उ. बहुत से संज्ञी मनुष्य के जीवों ने पाँच अनुत्तर विमान के देव रूप में द्रव्येन्द्रियाँ अतीतकाल में संख्यात कीं, वर्तमान में नहीं है और भविष्य में संख्यात करेंगे।

(i) युगलिक मनुष्यों में आगति-गति द्वार लिखिए।

उ. आगति 2- तिर्यंच और मनुष्य से। गति-एक- देवगति में। दण्डक की अपेक्षा-तीस अकर्म भूमि की आगति दो दण्डक से- मनुष्य और तिर्यंच पंचेन्द्रिय से।

गति-दण्डक 13 में - 10 भवनपति, 1 वाणव्यंतर, 1 ज्योतिषी और 1 वैमानिक में।

(j) एक-एक नारकी के नैरयिक की मनुष्य व 5 अनुत्तर विमानपने तीनों काल की द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।

उ. एक-एक नारकी के नैरयिक ने संज्ञी मनुष्य रूप में द्रव्येन्द्रियाँ अतीत काल में अनंत कीं, वर्तमान काल में नहीं है और भविष्य काल में नियमपूर्वक 8 या 16 या 24 यावत् संख्यात, असंख्यात, अनंत करेंगे। एक-एक नारकी के नैरयिक ने पाँच अनुत्तर विमान रूप में द्रव्येन्द्रियाँ अतीत में नहीं कीं, वर्तमान में नहीं है और भविष्य में कोई करेंगे, कोई नहीं करेंगे। जो करेंगे वे चार अनुत्तर विमान रूप में आठ अथवा सोलह करेंगे और सर्वार्थसिद्ध रूप में आठ करेंगे।

(k) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अवगाहना लिखिए।

उ. जलचर, स्थलचर,खेचर, उरपरिसर्प और भुजपरिसर्प। सभी की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट जलचर की 1000 योजन। स्थलचर की प्रत्येक (पृथक्त्व) गाउ। खेचर की प्रत्येक धनुष, उरपरिसर्प की प्रत्येक योजन और भुजपरिसर्प की प्रत्येक धनुष की।

(l) आराधक के भेद लिखिए।

उ. तीन प्रकार के जीव आराधक कहलाते हैं-

1. आयु कर्म का बंध नहीं करने वाले मनुष्य जो उसी भव में मोक्ष जायेंगे।

2. अप्रमत्त अवस्था(7वें से 11वें गुणस्थान तक) में काल करने वाले साधु-साध्वी।

3. चौथे से सातवें गुणस्थान में रहते हुए अगले भव का आयुष्य बंध करने वाले जीव।

(m) **नारकी की अवगाहना लिखिए।**

उ. नारकी की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट पहली नारकी की 7¾ धनुष, 6 अंगुल। दूसरी नारकी की 15½ धनुष, 12 अंगुल। तीसरी नारकी की 31¼ धनुष। चौथी नारकी की 62½ धनुष। पाँचवीं नारकी की 125 धनुष। छठी नारकी की 250 धनुष। सातवीं नारकी की 500 धनुष।

(n) **जो वर्तमान में क्षयोपशम समकिती है, किन्तु बाद में उपशम श्रेणि करेंगे, उनकी अपेक्षा से बनने वाले भंग लिखिए।**

उ.

1. चार का उपशम	**दो का क्षयोपशम**	**एक का वेदन**
2. 6 का उपशम		**एक का वेदन**
3. 7 का उपशम		
4. 4 की विसंयोजना	**2 का क्षयोपशम**	**एक का वेदन**
5. 4 की विसंयोजना	**2 का उपशम**	**एक का वेदन**
6. 4 की विसंयोजना	**3 का उपशम**	